प्रारंभिक परीक्षा

ब्लू बॉन्ड(BLUE BOND)

संदर्भ

पत्तन, पोत परिवहन और जलमार्ग मंत्रालय के तहत एक सरकारी स्वामित्व वाली एनबीएफसी (NBFC), सागरमाला फाइनेंस कॉर्पोरेशन ने भारत का पहला ब्लू बॉन्ड जारी करने की योजना की घोषणा की है।

ब्लू बॉन्ड के बारे में

- **ब्लू बॉन्ड एक ऋण साधन (debt instrument) है जो विशेष रूप से निम्नलिखित से जुड़ी परियोजनाओं के लिए धन जुटाता है: महासागर, समुद्र और तट, नदियां और अंतर्देशीय जलमार्ग, जल-आधारित पारिस्थितिक तंत्र।**
- यह संधारणीय (sustainable) और पर्यावरण-केंद्रित वित्त में रुचि रखने वाले निवेशकों को लक्षित करता है।

ब्लू बॉन्ड बनाम ग्रीन बॉन्ड

मापदंड (Parameter)	ग्रीन बॉन्ड (Green Bond)	ब्लू बॉन्ड (Blue Bond)
केंद्र (Focus)	व्यापक जलवायु और पर्यावरण परियोजनाएं	महासागर, समुद्री और जल-विशिष्ट परियोजनाएं
दायरा (Scope)	नवीकरणीय ऊर्जा, वनीकरण, स्वच्छ परिवहन, अपशिष्ट प्रबंधन आदि।	संधारणीय मत्स्य पालन, बंदरगाह, तटीय लचीलापन (coastal resilience), जलमार्ग, समुद्री संरक्षण आदि।
विशिष्टता (Specificity)	व्यापक पर्यावरणीय केंद्र	संकीर्ण, विशेष रूप से जल-केंद्रित
उद्देश्य (Objective)	समग्र पर्यावरणीय संधारणीयता और जलवायु कार्रवाई को बढ़ावा देना	जलीय और समुद्री संसाधनों के संधारणीय उपयोग और संरक्षण का समर्थन करना

ब्लू बॉन्ड का महत्व

- वैश्विक संधारणीय वित्त (ESG निवेशकों) को आकर्षित करता है
- बजटीय संसाधनों पर दबाव कम करता है
- तटीय समुदायों और आजीविका का समर्थन करता है
- समुद्री संरक्षण के साथ समुद्री बुनियादी ढांचे के विकास को संतुलित करता है

वैश्विक मिसालें

- **2018 – सेशेल्स:** संधारणीय मत्स्य पालन और समुद्री संरक्षण के लिए धन जुटाने हेतु दुनिया का पहला संप्रभु (sovereign) ब्लू बॉन्ड जारी किया।
- **2021 – बेलीज:** एक ऐतिहासिक 'डेब्ट-फॉर-ओशन स्वैप' (debt-for-ocean swap) लागू किया, जिसमें दीर्घकालिक समुद्री संरक्षण प्रतिबद्धताओं के बदले संप्रभु ऋण का पुनर्गठन किया गया।

रुद्रम-II (RUDRAM-II)

संदर्भ

रुद्रम-II के सफल उड़ान परीक्षण के साथ भारत के रक्षा स्वदेशीकरण अभियान को एक बड़ा बढ़ावा मिला।

रुद्रम-II के बारे में

- **विकसित:** भारतीय वायु सेना (IAF) के सहयोग से डीआरडीओ (DRDO) द्वारा
- **श्रेणी:** हवा से सतह पर मार करने वाली मिसाइल (ASM)
- **प्रक्षेपण मंच:** हवाई (लड़ाकू विमान)
- **प्रहार प्रकार:** सटीक स्टैंड-ऑफ प्रहार (Precision stand-off strike), दुश्मन की वायु रक्षा सीमा के बाहर सुरक्षित दूरी से प्रक्षेपित
- **मार्गदर्शन:** सटीक लक्ष्य भेदन के लिए मल्टी-मोड सीकर (Multi-mode seeker)
- **प्रणोदन:** ठोस-ईंधन रॉकेट मोटर (HEMRL द्वारा विकसित)
- **मारक क्षमता:** मध्यम से लंबी दूरी (सटीक सीमा गोपनीय है)
- **युद्धशीर्ष:** उच्च-विस्फोटक; ARDE द्वारा विकसित
- **लक्ष्य:** ज़मीनी और सतही लक्ष्य

एंटी-रेडिएशन मिसाइल = दुश्मन के रडार और वायु रक्षा प्रणालियों के विद्युत चुम्बकीय उत्सर्जन (electromagnetic emissions) को लक्षित करके उन्हें पहचानने, ट्रैक करने और बेअसर करने के लिए डिज़ाइन की गई है।

रुद्रम-I ⟶ एंटी-रेडिएशन मिसाइल (ARM); दुश्मन के रडार के विद्युत चुम्बकीय उत्सर्जन को लक्षित करती है

बोलाइड्स (BOLIDES)

संदर्भ

30 मई 2026 को, पूर्वोत्तर संयुक्त राज्य अमेरिका के ऊपर एक उल्का में विस्फोट हुआ, जिससे लगभग 300 टन टीएनटी (TNT) के बराबर ऊर्जा जारी हुई; नासा (NASA) ने इसे एक बोलाइड के रूप में पहचाना।

बोलाइड्स के बारे में (About Bolides)

- **बोलाइड एक असाधारण रूप से चमकीली उल्का है जो पृथ्वी के वायुमंडल के भीतर टूट जाती है या फट जाती है, जिससे बड़ी मात्रा में ऊर्जा निकलती है और तेज धमाकों के रूप में सुनाई देने वाली शॉकवेव (shockwaves) उत्पन्न होती हैं।**
- **उत्पत्ति:** क्षुद्रग्रहों (asteroids) (सबसे आम) या सूर्य की परिक्रमा करने वाले धूमकेतुओं (comets) के छोटे टुकड़े।
- **प्रवेश:** मार्ग पृथ्वी की कक्षा को काटते हैं ⟶ प्रति सेकंड दसियों किमी की गति से वायुमंडल में प्रवेश करते हैं।
- **संपीड़न प्रभाव:** आगे की हवा संकुचित और गर्म हो जाती है ⟶ वस्तु चमकने लगती है ⟶ प्रकाश की तेज लकीर।
- **विस्फोट:** बड़ी वस्तुएं हिंसक रूप से खंडित होती हैं ⟶ ऊर्जा छोड़ती हैं ⟶ शॉकवेव उत्पन्न करती हैं।

- **ध्वनि:** तेज़ धमाके जैसी आवाज़ें = हिंसक विखंडन द्वारा उत्पन्न शॉकवेव का परिणाम।
- **ऊर्जा विमुक्ति:** टीएनटी समतुल्य (TNT equivalent) में मापी जाती है।
- **विस्फोट की ऊंचाई:** आमतौर पर जमीन से दसियों किलोमीटर ऊपर।
- अधिकांश उल्काएँ जमीन पर पहुंचने से पहले पूरी तरह से जल जाती हैं; केवल बड़ी उल्काएँ ही फायरबॉल/बोलाइड (fireballs/bolides) बनती हैं।

चरण (Stage)	विवरण (Description)
उल्काभ (Meteoroid)	अंतरिक्ष में यात्रा करने वाले छोटे चट्टानी या धात्विक टुकड़े, जो आमतौर पर क्षुद्रग्रहों या धूमकेतुओं से उत्पन्न होते हैं और सूर्य की परिक्रमा करते हैं।
उल्का (Meteor)	एक उल्काभ जो पृथ्वी के वायुमंडल में प्रवेश करता है और हवा के संपीड़न के कारण अत्यधिक ताप से चमकता है, जो प्रकाश की एक लकीर ("टूटता तारा" या "shooting star") के रूप में दिखाई देता है।
फायरबॉल (Fireball)	एक अपेक्षाकृत बड़े उल्काभ द्वारा निर्मित एक असाधारण रूप से चमकीला उल्का, जो वायुमंडल में लंबी अवधि तक दिखाई देता है।
उल्कापिंड (Meteorite)	एक उल्काभ का वह टुकड़ा जो वायुमंडलीय मार्ग से बच जाता है और पृथ्वी की सतह तक पहुंचता है।

मिशन सनेहजोरी (MISSION SENEHJORI)

संदर्भ

पूर्वोत्तर क्षेत्र विकास मंत्रालय ने मिशन "सनेहजोरी" - असम मूगा सिल्क यूएसपी (Assam Muga Silk USP) लॉन्च किया, जो असम के मूगा सिल्क क्षेत्र को विश्व स्तर पर प्रतिस्पर्धी लक्जरी कपड़ा पारिस्थितिकी तंत्र में बदलने के लिए एक व्यापक क्लस्टर-आधारित पहल है।

मिशन सनेहजोरी की मुख्य विशेषताएं

- **जीआई प्रमाणीकरण:** ट्रैसेबिलिटी (traceability) लागू करना; असली मूगा सिल्क में मिलावट को रोकना।
- **डिजिटल ट्रैसेबिलिटी:** उत्पादक परिवारों के लिए खेत-से-बाजार (farm-to-market) तक ट्रैकिंग।
- **एफपीओ और सीएफसी:** उत्पादक समूहों को मजबूत करने के लिए किसान उत्पादक संगठन (Farmer Producer Organisations) और सामान्य सुविधा केंद्र (Common Facility Centres)।
- **ब्रांडिंग:** "सनेहजोरी" के तहत एकीकृत वैश्विक ब्रांड पहचान।
- **निर्यात संवर्धन:** प्रीमियम घरेलू और अंतर्राष्ट्रीय लक्जरी बाजारों को लक्षित करना।
- **सिल्क पर्यटन:** मूगा सिल्क ट्रेल, सिल्क टूरिज्म पार्क, वार्षिक मूगा उत्सव।
- **पोषी पादप पारिस्थितिकी:** रेशम के कीड़ों के भरण-पोषण के लिए सोम (Som) और सोआलू (Soalu) के बागानों का पुनरुद्धार।
- **लक्ष्य**

- 5 आधुनिकीकृत मूगा रीलिंग इकाइयाँ और एक मूगा स्पन मिल स्थापित करना
- 30 एफपीओ और 1,180 से अधिक किसान हित समूह बनाना
- 5,000 हेक्टेयर में सोम और सोआलू के पौधों का पुनरुद्धार करना
- जीआई-लिंक्ड (GI-linked) प्रणालियों के माध्यम से 80%+ व्यापारित मूगा सिल्क को प्रमाणित करना
- 8,000+ परिवारों के लिए डिजिटल ट्रैसेबिलिटी बनाना
- सालाना मूगा सिल्क के निर्यात को 2,000+ किलोग्राम तक बढ़ाना

मूगा सिल्क के बारे में

विशेषता (Feature)	विवरण (Details)
प्रकार	प्राकृतिक रूप से सुनहरे रंग का रेशम
विशिष्टता	दुनिया का एकमात्र प्राकृतिक रूप से सुनहरा रेशम
जीआई दर्जा	भौगोलिक संकेतक (GI) टैग प्राप्त करने वाला भारत का पहला रेशम
उत्पादन केंद्र	असम दुनिया के लगभग 90% मूगा सिल्क का उत्पादन करता है
पोषी पौधे	रेशम के कीड़े मुख्य रूप से सोम और सोआलू के पौधों पर भोजन करते हैं
आजीविका समर्थन	लगभग 2.6 लाख पालक और बुनकर परिवारों का भरण-पोषण करता है

उत्पादक मूल्य सूचकांक (PRODUCER PRICE INDEX - PPI)

संदर्भ

केंद्र ने मुद्रास्फीति की प्रवृत्तियों के अधिक यथार्थवादी आकलन के लिए अगले पांच वर्षों में थोक मूल्य सूचकांक (WPI) को चरणबद्ध रूप से समाप्त करने और इसे उत्पादक मूल्य सूचकांक (PPI) से बदलने की घोषणा की।

WPI से PPI संक्रमण

- WPI की नई श्रृंखला (आधार वर्ष 2022-23) पुरानी 2011-12 श्रृंखला को प्रतिस्थापित करते हुए 15 जून, 2026 को जारी होगी।
- PPI की नई श्रृंखला भी एक साथ 15 जून, 2026 को लॉन्च होगी।
- WPI, PPI के साथ 5 वर्षों तक जारी रहेगा, जिससे उपयोगकर्ताओं को WPI से PPI में स्विच करने का समय मिलेगा।
- WPI वर्तमान में अनुबंधों में मूल्य वृद्धि खंडों (price escalation clauses) में शामिल है, 5 साल की यह विंडो सुचारू संक्रमण (smooth transition) की अनुमति देती है।
- 5 वर्षों के बाद, PPI पूरी तरह से WPI की जगह ले लेगा।

PPI के बारे में

- **उत्पादक मूल्य सूचकांक (PPI) उत्पादक/फैक्ट्री गेट स्तर पर मूल्य परिवर्तनों को मापता है, जो वस्तुओं और सेवाओं के थोक या खुदरा बाजार में पहुंचने से पहले की कीमतों को रिकॉर्ड करता है।**
- वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय के तहत डीपीआईआईटी (DPIIT) द्वारा संकलित।
- **आधार वर्ष:** 2022–23

- **घटक:**
    - आउटपुट PPI: उत्पादित वस्तुओं/सेवाओं के मूल्य में परिवर्तन (फैक्ट्री गेट पर)
    - इनपुट PPI (परीक्षण): उत्पादन में उपयोग किए जाने वाले कच्चे माल/इनपुट के मूल्य में परिवर्तन
    - सेवाएँ PPI: सेवा क्षेत्रों में मूल्य परिवर्तन
        - बैंकिंग, प्रतिभूति लेन-देन, बीमा, पेंशन फंड का प्रबंधन, रेलवे, वायु (यात्री), दूरसंचार

PPI, WPI से बेहतर क्यों है

- WPI केवल वस्तुओं को कवर करता है; PPI वस्तुओं और सेवाओं दोनों को कवर करता है।
- PPI आउटपुट और इनपुट दोनों की मूल्य गतिविधियों को रिकॉर्ड करता है।
- उत्पादक-स्तर के मुद्रास्फीति संचरण (inflation transmission) की बेहतर समझ प्रदान करता है।
- भारत को उन्नत अर्थव्यवस्थाओं और आईएमएफ (IMF) मानकों के अनुरूप बनाता है।

थोक मूल्य सूचकांक (WPI)

- **परिभाषा**: WPI एक निश्चित समयावधि में घरेलू बाजार में थोक (थोक-बिक्री) स्तर पर वस्तुओं की एक निश्चित टोकरी के कीमतों में औसत परिवर्तन को मापता है।

• Items to weights: How the WPI is changing

	WPI-2011/12 series		WPI-2022/23 series	
	No. of items	Weight	No. of items	Weight
Primary Articles items	115	22.62%	129	22.76%
Fuel & Power items	18	13.15%	25	14.11%
Manufactured items	564	64.23%	803	63.13%
TOTAL ITEMS	**697**	**100%**	**957**	**100%**

SOURCE: MINISTRY OF COMMERCE & INDUSTRY

- किसके द्वारा जारी: वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय के उद्योग संवर्धन और आंतरिक व्यापार विभाग (DPIIT) के तहत आर्थिक सलाहकार के कार्यालय (OEA) द्वारासंशोधित WPI श्रृंखला में प्रमुख बदलाव (Key Changes in the Revised WPI Series)
- **नया आधार वर्ष:** 2011–12 से संशोधित कर 2022–23 किया गया।
- **व्यापक कवरेज:** अर्थव्यवस्था के बेहतर प्रतिनिधित्व के लिए वस्तुओं की संख्या 697 से बढ़ाकर 957 कर दी गई।
- **युक्तिसंगत ऊर्जा टोकरी (Rationalised Energy Basket):**
    - सौर, पवन और परमाणु ऊर्जा को बिजली श्रेणी के अंतर्गत शामिल किया गया है।
    - कच्चा पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस को ईंधन और ऊर्जा (Fuel & Power) समूह में स्थानांतरित किया गया है।

येलो-थ्रोटेड मार्टन (YELLOW-THROATED MARTEN)

संदर्भ

काजीरंगा राष्ट्रीय उद्यान ने अपनी सीमाओं के भीतर पहली बार येलो-थ्रोटेड मार्टन को देखे जाने का रिकॉर्ड दर्ज किया है, जो उद्यान के समृद्ध जैव विविधता प्रलेखन (biodiversity documentation) में एक नया अध्याय जोड़ता है।

येलो-थ्रोटेड मार्टन के बारे में

- **परिवार:** मस्टेलिडे (Mustelidae) (ऊदबिलाव, बेजर, वूल्वरिन, नेवले के समान)
- **आवास:** घने जंगल- उष्णकटिबंधीय, उपोष्णकटिबंधीय और समशीतोष्ण; अत्यधिक वृक्षवासी (arboreal)
- **वितरण:** दक्षिण एशिया, दक्षिण पूर्व एशिया, पूर्वी एशिया, रूसी सुदूर पूर्व, भारत: पूर्वोत्तर भारत, पश्चिमी घाट, हिमालय, अंडमान द्वीप समूह
- **प्रमुख विशेषताएँ**
    - **आकार:** पुरानी दुनिया (Old World) का सबसे बड़ा मार्टन
    - **विशिष्ट विशेषता:** चमकीला पीला/सुनहरा गला और छाती का धब्बा; इसी से इसका यह नाम पड़ा है
    - **शरीर:** पतला, लंबा शरीर; पीले निचले हिस्से के साथ गहरे भूरे रंग की पीठ
    - **पूंछ:** लंबी और घनी- पेड़ों में संतुलन के लिए उपयोग की जाती है
    - **आहार:** सर्वाहारी- छोटे स्तनधारी, पक्षी, अंडे, फल, शहद, कीड़े; झुंड में हिरण के बच्चों का शिकार करने के लिए जाने जाते हैं
    - **शिकार शैली:** दिनचर (दिन के दौरान सक्रिय), मस्टेलिड्स के बीच असामान्य
    - **सामाजिक:** अक्सर जोड़े या छोटे समूहों में देखे जाते हैं, मस्टेलिड्स के बीच दुर्लभ
    - **गतिशीलता:** उत्कृष्ट पर्वतारोही; वन वितान (forest canopy) के माध्यम से तेजी से आगे बढ़ते हैं
    - **संरक्षण की स्थिति**
        - **आईयूसीएन (IUCN) रेड लिस्ट:** कम चिंताजनक (Least Concern)
        - **साइट्स (CITES):** परिशिष्ट III ○ **वन्यजीव संरक्षण अधिनियम, 1972:** अनुसूची II

प्रधानमंत्री अनुसंधान चेयर (PMRC) योजना 2026

संदर्भ

शिक्षा मंत्रालय के उच्च शिक्षा विभाग ने प्रधानमंत्री अनुसंधान चेयर (PMRC) योजना 2026 के लिए आवेदन आमंत्रित किए हैं।

PMRC योजना के बारे में

- **उद्देश्य:** विदेशों में काम कर रहे निपुण भारतीय मूल के शोधकर्ताओं, वैज्ञानिकों और पेशेवरों को भारत के अनुसंधान, नवाचार और प्रौद्योगिकी क्षेत्रों से जोड़ना।
- **लक्षित क्षेत्र:** एआई (AI), क्वांटम कंप्यूटिंग, सेमीकंडक्टर्स, साइबर सुरक्षा, जैव प्रौद्योगिकी, स्वास्थ्य देखभाल, महत्वपूर्ण खनिज, अंतरिक्ष, रक्षा, ब्लू इकॉनमी और परमाणु ऊर्जा सहित 13 प्राथमिकता वाले क्षेत्रों को कवर करता है।

- **तीन स्तंभ:** लीड इंस्टीट्यूशंस (Lead Institutions), होस्ट इंस्टीट्यूशंस (Host Institutions) और PMRC फेलो के इर्द-गिर्द निर्मित।
- **शामिल संस्थान**
    - **होस्ट संस्थान:** शीर्ष रैंक वाले सरकारी उच्च शिक्षण संस्थान (HEIs - NIRF) और डीएसटी (DST), डीबीटी (DBT), आईसीएमआर (ICMR), सीएसआईआर (CSIR) और अन्य एजेंसियों के तहत राष्ट्रीय प्रयोगशालाएं।
    - **लीड संस्थान:** सात प्रमुख संस्थान—छह आईआईटी (दिल्ली, बॉम्बे, मद्रास, कानपुर, हैदराबाद, आईएसएम धनबाद) और आईआईएससी (IISc) बेंगलुरु—विषयगत क्षेत्रों में कार्यान्वयन का समन्वय करेंगे।
- **फेलो की श्रेणियां:** युवा अनुसंधान फेलो (Young Research Fellows), वरिष्ठ अनुसंधान फेलो (Senior Research Fellows) और अनुसंधान चेयर (Research Chairs)।
    - **पात्र फेलो:** विदेशों में काम करने वाले भारतीय नागरिक, ओसीआई (OCI) कार्डधारक और अनुसंधान एवं प्रौद्योगिकी में महत्वपूर्ण उपलब्धियों वाले भारतीय मूल के व्यक्ति (PIOs)।
- **प्रदान की गई सहायता:** फेलोशिप अनुदान, अनुसंधान निधि, प्रयोगशालाओं तक पहुंच, अनुसंधान बुनियादी ढांचा और प्रमुख भारतीय संस्थानों के साथ सहयोग।
- **चयन तंत्र:** फेलो और संस्थानों का चयन भारत सरकार के प्रधान वैज्ञानिक सलाहकार (PSA) की अध्यक्षता वाली एक अधिकार प्राप्त समिति (Empowered Committee) के माध्यम से किया जाएगा।

ज़ैनिच (ZAYNICH)

संदर्भ

यूएस एफडीए (U.S. FDA) ने ज़ैनिच को मंजूरी दी है, जो महत्वपूर्ण भारतीय वैज्ञानिक योगदान के साथ विकसित एक नया एंटीबायोटिक है।

ज़ैनिच के बारे में

- **प्रकार:** दवा-प्रतिरोधी (drug-resistant) जीवाणु संक्रमण के लिए नया एंटीबायोटिक।
- **महत्व:** नई दवा की खोज में भारत की क्षमता को प्रदर्शित करता है।
- **एएमआर पर ध्यान (AMR Focus):** भारत में देखे जाने वाले प्रतिरोध पैटर्न (resistance patterns) को ध्यान में रखकर विकसित किया गया।
- **विनियामक मील का पत्थर:** यूएस एफडीए (U.S. FDA) द्वारा अनुमोदित।
- **महत्व:** प्रतिरोधी संक्रमणों के खिलाफ उपचार के विकल्पों का विस्तार करता है।

रोगाणुरोधी प्रतिरोध (AMR) के बारे में

- **अर्थ:** सूक्ष्मजीव (बैक्टीरिया, वायरस, कवक और परजीवी) दवाओं के प्रति प्रतिरोधी हो जाते हैं।
- **प्रभाव:** संक्रमण का इलाज करना अधिक कठिन बना देता है।
- **कारण:** रोगाणुरोधी दवाओं (antimicrobial drugs) का अत्यधिक उपयोग और दुरुपयोग।

- **वैश्विक चिंता:** डब्ल्यूएचओ (WHO) के प्रमुख सार्वजनिक स्वास्थ्य खतरों में से एक।
- **समाधान:** नए एंटीबायोटिक्स और जिम्मेदार दवा उपयोग की आवश्यकता है।

मुख्य परीक्षा

भारत-चीन सीमा विवाद

संदर्भ

हाल ही में भारत-चीन सीमा मामलों पर परामर्श और समन्वय के लिए कार्य तंत्र (Working Mechanism for Consultation & Coordination on India-China Border Affairs - WMCC) की 35वीं बैठक में भारत-चीन सीमा क्षेत्रों की स्थिति की समीक्षा की गई।

भारत-चीन सीमा के बारे में

- **कुल सीमा की लंबाई:** 3,488 किमी, बांग्लादेश (4,096 किमी) के बाद भारत की दूसरी सबसे लंबी भूमि सीमा है।
- सीमा का सीमांकन (un-demarcated) नहीं हुआ है, इसे वास्तविक नियंत्रण रेखा (Line of Actual Control - LAC) द्वारा परिभाषित किया गया है, यह कोई औपचारिक, पारस्परिक रूप से सहमत सीमा नहीं है।

भारत-चीन विवादित क्षेत्र

क्षेत्र (Sector)	स्थान / प्रमुख क्षेत्र	प्रमुख मुद्दे (Major Issues)
पश्चिमी क्षेत्र (Western Sector)	**लद्दाख – अक्साई चिन**	चीन का अक्साई चिन पर नियंत्रण है, जबकि भारत इसे लद्दाख के हिस्से के रूप में दावा करता है। यह रणनीतिक रूप से सबसे संवेदनशील क्षेत्र है और 2020 में गलवान घाटी संघर्ष (Galwan Valley clash) का स्थल था।
मध्य क्षेत्र (Middle Sector)	**हिमाचल प्रदेश और उत्तराखंड**	इसमें कौरिक और लाहौल-स्पीति घाटी (हिमाचल प्रदेश), तथा बाड़ा होती और नेलांग घाटी (उत्तराखंड) शामिल हैं। यह भारत-चीन सीमा का सबसे कम विवादित क्षेत्र है।
पूर्वी क्षेत्र (Eastern Sector)	**अरुणाचल प्रदेश, सिक्किम**	• **अरुणाचल प्रदेश:** चीन अरुणाचल प्रदेश को "दक्षिणी तिब्बत" (Zàng Nán) के रूप में दावा करता है, जिसमें तवांग (Tawang) क्षेत्र पर विशेष जोर दिया गया है। यह विवाद मैकमोहन रेखा (McMahon Line) पर केंद्रित है • **सिक्किम:** प्रमुख क्षेत्रों में नाथू ला, नाकू ला, चो ला, डोकलाम पठार (2017 के भारत-चीन गतिरोध का स्थल), जम्फेरी रिज, माउंट जिपमोची और बतांग ला शामिल हैं। भारत-भूटान-चीन ट्राई-जंक्शन (tri-junction) से निकटता के कारण यह क्षेत्र रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण है।

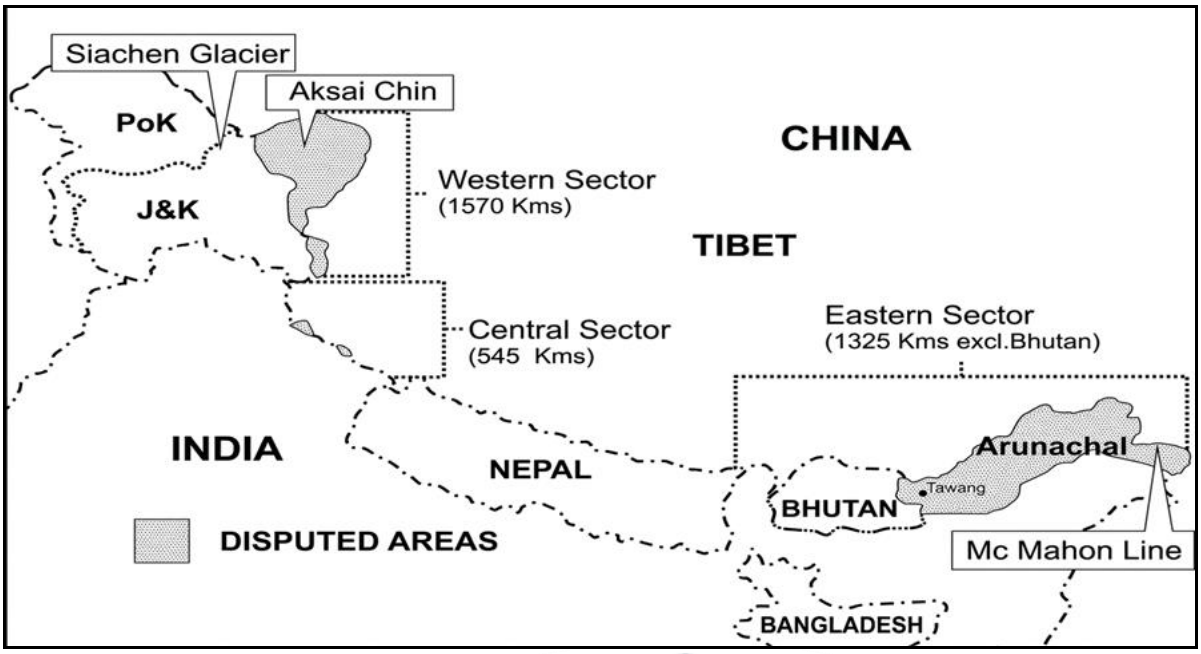

अर्ली हार्वेस्ट प्रस्ताव (Early Harvest Proposal)

'अर्ली हार्वेस्ट' (Early Harvest) अवधारणा तुलनात्मक रूप से आसान क्षेत्रों को पहले हल करने का प्रस्ताव करती है, जिसमें सिक्किम प्राथमिक उम्मीदवार है, जबकि पूर्वी लद्दाख और अरुणाचल प्रदेश में विवादित मुद्दों को बाद की बातचीत के लिए टाल दिया जाता है।

- **चीन इस पर जोर क्यों देता है (Why China Pushes It)**
  - सुलझाए गए क्षेत्रों में औपचारिक क्षेत्रीय मान्यता को स्थायी रूप से सुरक्षित करता है।
  - भारत के 'पैकेज-समझौता' (package-settlement) प्रभाव को कमजोर करता है, एक बार कोई क्षेत्र सुलझ जाने के बाद, वह बातचीत की मेज से बाहर हो जाता है।
  - अक्साई चिन और अरुणाचल प्रदेश जैसे विवादित क्षेत्रों में चीन का पूर्ण लचीलापन (flexibility) बनाए रखता है।
  - डोकलाम के पास ट्राई-जंक्शन स्थान को अपने पक्ष में बदलने के चीन के लक्ष्य को आगे बढ़ाता है।
  - ऐसी राजनयिक गति (diplomatic momentum) पैदा करता है जो समय के साथ भारत पर आगे की रियायतों (concessions) के लिए दबाव डालती है।
- **भारत सतर्क क्यों है (Why India is Wary)**
  - सिक्किम का समझौता वास्तव में आसान नहीं है, इसमें गहन रणनीतिक परिणामों के साथ ट्राई-जंक्शन विवाद शामिल है।
  - चीन पहले ही बुनियादी ढांचे और सीमावर्ती गांवों के माध्यम से जमीनी हकीकत बदल चुका है, एक समझौता इन एकतरफा बदलावों को वैध (legitimise) बना सकता है।

- असममित परिणाम (Asymmetric outcome): चीन को औपचारिक मान्यता प्राप्त होती है; बदले में भारत को केवल एक राजनयिक माहौल मिलता है।
- ऐतिहासिक मिसाल (Historical precedent): 1993 और 1996 के विश्वास निर्माण उपायों (CBMs) ने 2020 के गलवान संघर्ष को नहीं रोका।

भारत-चीन-भूटान ट्राई-जंक्शन

महत्व

- जम्फेरी/ज़ोमपेलरी रिज (Jampheri/Zompelri Ridge) से सीधे सिलीगुड़ी कॉरिडोर (Siliguri Corridor) पर नज़र रखी जा सकती है, जो भारत के आठ पूर्वोत्तर राज्यों से जुड़ने वाला एकमात्र भूमि संपर्क है।
- सिलीगुड़ी कॉरिडोर ("चिकन नेक") अपने सबसे संकरे हिस्से में बमुश्किल ~22 किमी चौड़ा है; इसके पास चीन की कोई भी सैन्य पहुंच एक अस्तित्वगत रणनीतिक खतरा (existential strategic threat) है।
  - एक अनुकूल ट्राई-जंक्शन चीन को चुम्बी घाटी (Chumbi Valley) से अधिक रणनीतिक गहराई और निगरानी क्षमता प्रदान करता है।

सीमा विवाद

- **भारत और भूटान की स्थिति:** भारत और भूटान का मानना है कि ट्राई-जंक्शन बतांग ला (Batang La) के पास स्थित है, जो जिपमोची के लगभग 6.5 किमी उत्तर में है
- **चीन की स्थिति:** चीन का दावा है कि 1890 का सम्मेलन (1890 Convention) ट्राई-जंक्शन को माउंट जिपमोची पर निर्धारित करता है, जो चीन को अधिक लाभप्रद स्थिति प्रदान करता है।

क्या भारत को क्षेत्रवार समझौता स्वीकार करना चाहिए?

- **पक्ष में तर्क**
  - वृद्धिशील प्रगति (Incremental progress) सीमा वार्ता के पूर्ण ठहराव को रोकती है।
  - सुलझे हुए क्षेत्रों में दिन-प्रतिदिन के घर्षण और अस्पष्टता को कम करता है।
  - विश्वास-निर्माण प्रभाव से व्यापक द्विपक्षीय माहौल में सुधार हो सकता है।
  - व्यापार, कनेक्टिविटी और लोगों से लोगों के जुड़ाव के लिए राजनयिक संसाधनों (diplomatic bandwidth) को मुक्त करता है।
- **विपक्ष में तर्क**
  - **प्रभाव में कमी (Loss of leverage):** सुलझे हुए क्षेत्र स्थायी रूप से बातचीत की मेज से बाहर हो जाते हैं; भारत उन पर पुनर्विचार नहीं कर सकता।
  - **सिलीगुड़ी कॉरिडोर जोखिम:** ट्राई-जंक्शन स्थान में मामूली बदलाव भी भारत के सबसे महत्वपूर्ण रणनीतिक चोकपॉइंट (chokepoint) के लिए खतरा बन सकता है।

- **2005 के ढांचे का विखंडन:** यह दशकों तक सावधानीपूर्वक बातचीत करके तैयार किए गए व्यापक पैकेज दृष्टिकोण (comprehensive package approach) को त्याग देता है।
- **कमजोरी का संकेत:** यह पश्चिमी और पूर्वी क्षेत्रों में चीन को अधिक दबाव डालने के लिए प्रोत्साहित कर सकता है।
- **भूटान आयाम:** ट्राई-जंक्शन की स्पष्टता के बिना सिक्किम का समाधान भारत-भूटान संबंधों को नुकसान पहुंचा सकता है।

आगे की राह

- 2005 के ढांचे पर आधारित व्यापक राजनीतिक समाधान (comprehensive political settlement) को आगे बढ़ाएं, राजनयिक दबाव में टुकड़ों में दी जाने वाली रियायतों (piecemeal concessions) का विरोध करें।
- सभी घर्षण बिंदुओं (friction points) पर पूर्ण वापसी (disengagement) को एक दृढ़ पूर्व शर्त बनाएं, जब तक चीनी सैनिक पूर्व के गैर-गश्ती क्षेत्रों (previously unpatrolled areas) पर कब्जा किए हुए हैं, तब तक किसी भी समझौता वार्ता को आगे नहीं बढ़ाया जाना चाहिए।
- सीमा क्षेत्र विकास कार्यक्रम (BADP) के तहत सीमा बुनियादी ढांचे की समानता (border infrastructure parity)—सड़कें, सुरंगें, हवाई क्षेत्र, सीमावर्ती गांव—में तेजी लाएं।
- किसी भी ट्राई-जंक्शन प्रस्ताव में दोनों देशों के हितों की रक्षा सुनिश्चित करने के लिए भूटान के साथ सक्रिय रूप से समन्वय करें।
- चीनी दबाव (Chinese coercion) की राजनयिक लागत बढ़ाने के लिए क्वाड (QUAD) और इंडो-पैसिफिक साझेदारियों (Indo-Pacific partnerships) का लाभ उठाएं।
- अचानक होने वाली घुसपैठ (surprise incursions) को रोकने के लिए LAC निगरानी तंत्र को संस्थागत बनाएं: उपग्रह निगरानी, गश्त समन्वय, हॉटलाइन।